आगामी कार्यक्रम

✡ **ब्रह्माकुमारीज स्पार्क विंग** द्वारा 'समाज के पुनरूत्थान में शोधकर्त्ताओं की भूमिका' विषय पर कान्फ्रेन्स का आयोजन 30 अगस्त से 3 सितम्बर 2013 तक ज्ञानसरोवर परिसर में आयोजित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -Sparc, Phone : 02974-238788, 09414003497, Email :bksparc@gmail.com

✡ **ब्रह्माकुमारीज ट्रांसपोर्ट विंग** द्वारा 'गति, सुरक्षा, आध्यात्मिकता' विषय पर महासम्मेलन का आयोजन 27 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2013 तक शांतिवन परिसर में आयोजित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.सुरेश, मुख्यालय संयोजक, Mobile: 9414153366, 9785358510, Email :hqoffice.ttw@gmail.com, transport.travelwing@bkivv.org

✡ **ब्रह्माकुमारीज ज्यूरिस्ट विंग** द्वारा 'स्प्रिच्युअल एम्पावरमेंट फॉर बेटर एडमिनिस्ट्रेशन इन ज्युडिशियल सिस्टम' विषय पर कान्फ्रेन्स का आयोजन 21 से 25 जून, 2013 तक ज्ञानसरोवर परिसर में आयोजित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.लता, मुख्यालय संयोजक, Mobile: 9414154670, 9414154671, Email : bklata011@gmail.com

✡ **ब्रह्माकुमारीज ट्रांसपोर्ट (शिपिंग एविएशन टूरिज्म सर्विस) विंग** द्वारा 'रिडिफाइनिंग हैप्पीनेस' विषय पर सेमिनार का आयोजन 26 से 30 जुलाई, 2013 तक ज्ञानसरोवर परिसर में आयोजित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.मीरा, राष्ट्रीय संयोजिका, Mobile: 09920142744, Email : satservicesttw@gmail.com, ब्र.कु.सुमन, मुख्यालय संयोजिका, Mobile: 9413384864, Email : satservices@bkivv.org

✡ **ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की पुण्यतिथि** 'विश्व बन्धुत्व दिवस' के रूप में मनाई जाएगी। इस अवसर पर 'सेल्फ-सावरन्टी थ्रू डिविनिटी' विषय पर मेडिटेशन रिट्रीट का आयोजन 24 से 26 अगस्त, 2013 तक शांतिवन परिसर में आयोजित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.मृत्युंजय, Mobile: 9414024067, Email :bksavitha1@gmail.com

मडगांव (गोवा)। आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री रविशंकर जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु.सुरेखा।

पोखरा (नेपाल)। नगर विकास के प्रमुख विष्णु बस्तीला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.परिणीता।

उज्जवल भविष्य ...

कहा कि इस सम्मेलन का जो मुख्य उद्देश्य है वह इस आध्यात्मिक वातावरण में ही पूरा होगा। कानून सदा ही धर्म के साथ होता है अगर हम सत्य और धर्म का साथ दें तो।

ब्रह्माकुमारीज़ ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि सही उद्देश्य तक पहुँचने में जो भी कार्य योजना हम यहाँ बनाएंगे उसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी क्योंकि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

ब्रह्माकुमारीज़ ज्यूरिस्ट विंग के क्षेत्रीय संयोजक ब्र.कु.महेश्वरी ने कार्यक्रम का मंच संचालन किया। इस रिट्रीट में भारत के विभिन्न प्रान्तों से जज, वकील, चार्टड एकाउन्टेन्ट्स तथा अन्य विधिक अधिकारियों सहित लगभग सात सौ से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

धन के साथ ...

यहां के ओजस्वी विचार व क्रियाकलाप मन को आंदोलित करते हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि चरित्र की बजाए लोगों में रूपये का मान बढ़ना अत्यंत दुखद है। आध्यात्मिक शक्ति का विकास होने पर ही हम सभी कमियों से मुक्त हो सकते हैं। ग्रामीणों का जीवन पहले मूल्यों व अच्छाइयों से सम्पन्न हुआ करता था लेकिन आज वे मूल्य दिखाई नहीं देते।

उड़ीसा सरकार के स्पेशल सेक्रेटरी, जनरल एडमिनिस्ट्रेशन नितिन चन्द्रा ने कहा कि इस संस्था के लोग, परिवेश, हावभाव व आचरण सब कुछ अचंभित करने वाला है। इतना अलौकिक वातावरण है कि लगता नहीं कि हम लोग पृथ्वी पर हैं। ब्रह्माकुमारीज के नि:स्वार्थ लोग बस काम में लगे हुए हैं, काम किये जा रहे हैं। ग्रामीणों के विकास के लिए आज 450 से भी अधिक योजनाएँ चल रही हैं। पूरे देश में इसके लिए आठ लाख करोड़ रूपये का बजट सालाना खर्च हो रहा है। फिर भी गरीबी क्यों बढ़ रही है यह विचारणीय है। कार्य को सफलता तक पहुंचाने की क्षमता का विकास आध्यात्मिकता द्वारा ही सम्भव है। मूल्यों के जागरण की पर आवश्यकता है।

ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका डॉ.निर्मला दीदी ने कहा कि सदाचार की शिक्षाओं को जीवन में न उतार पाना ही वर्तमान समय की सभी बुराइयों का मूल कारण है। जब मनुष्य अच्छा बनने का लक्ष्य रख जीवन में आध्यात्मिकता को धारण करेंगे तभी हर समस्या का निदान होगा। यह अध्यात्म आंतरिक सुख देता है।

ब्र.कु.जागृति ने कहा कि इस दुनियाँ में सब कुछ बाहरी है, आंतरिक कुछ भी नहीं है। देश किसानों पर आधारित है। उन किसानों को आधारभूत सुविधाएं दिलाने के लिए आज एक सच्चे नेतृत्व की आवश्यकता है। इस संस्थान के भाई बहनों के अंदर आध्यात्मिकता के आधार पर नेतृत्व की क्षमता भरी गई हैं। स्वयं को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाकर ग्रामीणों का विकास कर सकेंगे।

ग्रामीण विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.सरला ने कहा कि भारतीय संस्कृति की धरोहर हमारे गॉव हैं। गाँवों से रोटी कपड़ा एवं मकान प्राप्त होता है। इसलिए गांवों के सर्वांगीण विकास की दिशा मे हमें कदम उठाना ही होगा। गाँवों की मात्र भौतिक उन्नति ही काफी नहीं है बल्कि ग्रामवासियों की आध्यात्मिक उन्नति का भी कार्य करना होगा।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.राजू ने सभी अतिथियों का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा कि ब्रह्मा बाबा ने अपनी आंतरिक शक्तियों के आधार पर इस संस्थान की स्थापना एवं पालना की। दादी प्रकाशमणि जी ने इस संस्थान की ख्याति विश्व भर में फैलाई। यह उनकी आंतरिक शक्ति का ही प्रतिफल है। मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी की आंतरिक शक्तियों का अनुभव उनकी ईश्वरीय सेवाओं से प्रकट होता है जो कि वे 97 वर्ष की आयु में भी पूरी दुनियॉ का भ्रमण करके लोगों के कल्याण के लिए आज भी सक्रिय हैं। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.शारदा बहन ने किया और ब्र.कु.राजेन्द्र भाई आभार व्यक्त किया।

अपने बोल द्वारा परिवार को सकारात्मक ऊर्जा दें

प्रश्न :- क्या मेडिटेशन से सोच का नवीनीकरण कर सकते हैं?

उत्तर :- मेडिटेशन कोई दो मिनट, दस मिनट, एक घंटे की चीज नहीं है, मेडिटेशन तो सारा दिन चलती रहती है। मेडिटेशन माना क्या?

मेडिटेशन की पहली अवस्था है स्वयं से बातें करना, फिर अवेयर होकर ध्यानपूर्वक सकारात्मक संकल्प करना। क्योंकि यही संकल्प आपके सारे दिन का आधार होता है। इसे हम सारा दिन कर सकते हैं लेकिन हम बैठकर ही क्यों करते हैं? क्योंकि सारा दिन तो हमें पता ही नहीं चलता है। अगर थोड़ी देर बैठकर हमने अभ्यास कर लिया तो ये सारा दिन करना आसान हो जायेगा।

अब आप अपने कल के दिन को नया करने की विधि सुनते हुए अभी से साथ-साथ देखते जाओ। सुबह सकारात्मक विचार के साथ उठो, तुरंत स्वयं से वादा करो कि मेरा बच्चों को उठाने का तरीका, बच्चों को तैयार कराने का तरीका, क्योंकि हम अपनी सोच के साथ जो उर्जा निर्मित करते हैं वही उर्जा पूरे घर के अंदर उत्पन्न होती है, यह सब कुछ आज हमें दृढ़ता के साथ करना है क्योंकि हम अपनी सोच के साथ जो उर्जा निर्मित करते हैं वही उर्जा पूरे घर के अंदर क्रियेट होती है। चाहे कुछ भी हो जाये, हमें स्थिर रहना है, करना तो वही काम है तैयार कराना है, सुबह का नाश्ता देना है, स्कूल तक छोड़ना है। अब उसी कार्य को या तो शांति से करो या फिर अशांति से करो। यह आप

पर निर्भर करता है।

प्रश्न :- बच्चे सुनते ही नहीं हैं, बच्चे उठते ही नहीं है, समय पर तैयार ही नहीं होते हैं। तो हम क्या करें?

उत्तर :- हम पहले से ही इतनी सारी सोच निर्मित कर लेते हैं। अच्छा बच्चे सुनते नहीं हैं, उठते नहीं हैं, ये उनका बचपना है, मेरे चिल्लाने से कोई जल्दी थोड़े ही हो जायेगा। हाँ, ये है कि उर्जा का स्तर बहुत ज्यादा ऊपर-नीचे हो जायेगा। हम चाहे घर पर हो या चाहे ऑफिस में हो हमें कुछ एक बातों का थोड़ा ध्यान रखना पड़ता है। एक जो हमने पिछली बार भी देखा कि हम 'निर्णायक' हो जाते हैं ये तो मौलिक है। मैं फिर से कहूंगी कि आप निर्णायक नहीं हो क्योंकि इससे हमारी बहुत सारी उर्जा नष्ट हो जाती है।

प्रश्न :- बच्चों ने होमवर्क नहीं किया सुबह पता चला। फिर?

उत्तर :- अब आपको शाम को ही उसका समाधान करना होगा। अलोचना करने से कुछ होने वाला नहीं है। नकारात्मक उर्जा देकर उसे स्कूल भेजना या खुद भी नकारात्मक उर्जा निर्मित करना, ये सही नहीं है। जैसे हम अन्य सब चीजों का ध्यान रखते हैं वैसे ही इसका भी ध्यान रखना चाहिए। हम उसके सुविधाओं का ध्यान रखते हैं, पानी व्यर्थ नहीं करते, बिजली बर्बाद नहीं करते, पेट्रोल बर्बाद नहीं करते और अपनी संकल्प शक्ति को नष्ट करते जाते हैं। हमें ध्यान ये रखना है कि हमारी उर्जा कहां नष्ट हो रही है। और बार-बार चिल्लाना, चीखना, गुस्सा करना, इससे हमारी बहुत सारी उर्जा नष्ट होती है। फिर श्रेष्ठ कार्य करने की शक्ति भी नहीं बच पाती।

हमें खुशी नहीं चाहिए, खुशी हमारे अंदर है उसको व्यर्थ मत कीजिए। आपके पास पानी का टैंक है और आप सारी दुनिया में ढूंढते फिर रहे हैं कि हमें पानी चाहिए....पानी चाहिए.... आप सिर्फ ये ध्यान रखो कि नल अगर ऐसे ही खुला रहा तो टैंक तो खाली हो जायेगी। हमारे पास खुशी है हमें सिर्फ ये ध्यान रखना है कि हमें निर्णायक नहीं होना है, दूसरों को दोष नहीं देना है, किसी की अलोचना नहीं करनी है क्योंकि इससे हमारी खुशी पानी की तरह बह जाती है। इससे हमारी जो उर्जा व्यर्थ होती है सो अलग। (क्रमश:)